

DPN 6282

Title : हनुमान पूजा व नित्यकर्म विधि HANUMĀNA PŪJĀ WA
NITYAKARMA VIDHI

Run. No. 6973

Cat. No. 33

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 8

Folios 28

Lines (in a page) 7/4

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ हनुमाने नमः ॥ ॥ हनुमानमा मूर्ति चोय, चतुर्बाहु धोजा गध्या कमान पदमः
पर्वत चतुरबाहु ॥ सिरमाह रामचन्द्र ॥

P.T.O.

△ इति हनुमन्त मूर्ति सरिर ध्यान प्रविमं च शुभे ॥॥

शंकरा हृदय

ॐ नमः संकरा देव्यै ॥ दत्तात्रय उवाच ॥

इति श्री महाकाव्य संहिताया संकरा प्रकरणे श्रीसंकरा हृदयं समाप्तः ॥ ॥

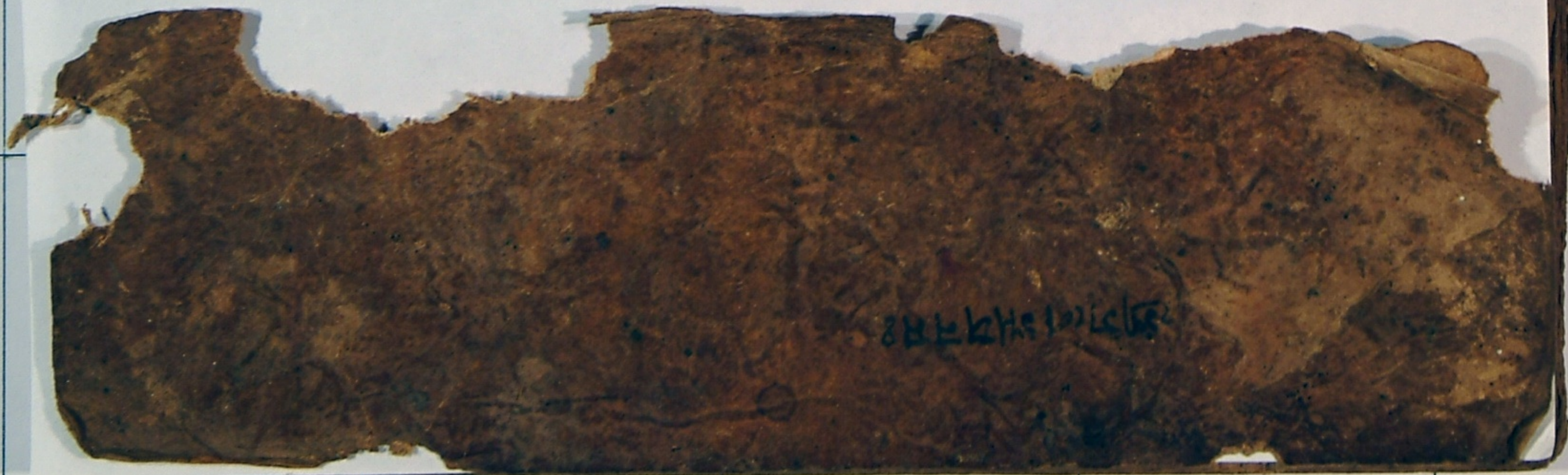
नित्यकर्मविधि

श्री २ महात्रिपुर सुदेव्यै नमः ॥ ॥ तोक्षिण ३, ऐं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥

एवमेव नित्यकर्म विधि ॥ शुभमस्तु ॥

10

5



88E KTHS 101562

5

10

15

20

ॐ हनुमते नमः ॥ हनुमानयामूर्ति शाय चतुर्बाहुः ॥ जागृकमानप
दमः ॥ यवत चतुर्बाहुः ॥ कवच ॥ सित्रमोहनामचन्द्र ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कथं २ स्वाहा ॥ प्रामञ्ज्यं ॥ ॐ नित्यामृता ॐ उन्नपहीनघश्चोहा ॥ उद्धृष्टा ॥ सिखा ॥
रूपाहाडौ ॥ ललाटे ॥ ॐ डौं डौं डौं नमः ॥ कपाल ॥ कलमूर्त्तकलह श्री ॥ जिरा ॥
भक्तमेव कथय स्वाहा ॥ दीप्युं माहामा ॥ शिरका कीवक वल्गुमस्यत्र कांका त्रिर्ली
भक्तमेव कथय २ स्वाहा ॥ जीवाञ्छ ॥ कंठ ॥ त्रैश ॥ त्रैश ॥ ३१ ॥ कै ० ॥ ठं हृदि ॥
नामि श्रु दलमाहाडौं कांका ॥ मित्र ॥ उद्धृष्टकथय शक्रसेन्यं विजयकृत् २

15
त्र 13 (क) त्रं (क) त्रं उँ ह्रा त भिनी हा रु दयं क नी नम ४ डी नम ४ ॥ जघु
न ॥ ग हा रु से न्य ना ठ य २ वू स्य २ रु २ द ह २ उँ ह्रा उँ डी ल क रु ४ य ग य न्या नी ॥
जा ना गु रु प झ रु म य ॥ य न पा द ॥ त्र ११ पा द त ल ॥ उँ डी डी डूँ अ सि जा त्र हा रु
ना ना त्र स्वा हा ॥ द क क व चे ॥ (उ) त्रं उँ जं हा य मी हा रु ॥ (उ) त्रं द य हा री नम ४ उँ
डी म हा मा रु म हा पु दि ना री म अ ग रु २ य रु क त न म हा रु से न्य रु म प त्र प
क वा न नम ४ स्वा हा ॥ द क क व च मं उ ॥ पा द रु ग म म ध मं उ ॥ (क) त्रं ग्री वा म चं डाय
हा रु न म ना य अं ज नी ग र्ह सें रु ता य प्री सी ल क्षा त्रि शा य म त्र प त्र त्र अ क र्ष य रा ण प

5
प्री ह न म ना य न म ना नम ४ ॥ १ ॥ उँ डी डी डूँ : उँ रु द स्वा हा उँ मा हा मा तं गि नी मू मू खी
द वी म हा पि सा वि नी का त्या य नी दू र्ग रु ग व ती धे त्र के स्य स र्व हा रु रुं ज य ३ ॥ ग
य य २ स्र त्र कं कू त्र २ स्वा हा ॥ पा द म ध ॥ जा नू म ध ॥ उँ न भा व रुं का रु वा व
क संधं द हा ड उँ अ त्र वा धा णी धा रु वा गी संध धा वि जा त क त्र क व क न्य मं उं
त रा दि कं क म ति त स्य वि ना से नी यं कू त्र २ मं ग ल रु द व दि मि कू त्र २ मं ग
ल रु द व दि मि रु ग वा य म ना ता ला कं त पि यं तं स क ल ध स्र या फि य मू त्र क
रु व रु ॥ ज ग ह न म ना य ज य प ता कि का य सा द म रु ति मं ग ल रु पा न् ॥ उँ डी डी डी

ॐ ॐ हनुमंताये उं डीं यै नमः ॥ अं ऊनी गरु संरुता सर्व हा फु से नै रु जयः २
 रु दय २ कू नू स्वाहा धन कस्य हा फु दय पाति देहं आ न ग र्हा रु वाति ह क र्हा
 कर्म हा ॥ कि नो रु ग थ त पि भ व य द्म मानं व र्ण कस्य स्वाहा धी न मु ॥ धन कस्य
 सि न्धा रु व उ ॥ क स्या हां प्र य ध्मा त उं डीं व न व द्वा य स्वाहा ॥ ॐ नि जानू म ध्म र्ग ॥
 वाम द्या दे ॥ नं १० जं द्रु (ज) ने उं नमः (उ) उं नमः उं नमः हा हा हा य आ सि
 विष नामा प प कि ना जा य धी न स भ त्रि ली य वि स ष हा हा फु से नै रु जय २
 मू सय २ नू दि नै स ष य २ उं डीं रु द्वा हा २ वाम जा द्रु ॥ जं ध ॥ रं ३२ ॥ जानू

(६)

मूल ॥ नं १२ ॥ ग जा वा द्रु ॥ नं १४ ॥ ग दामं ग ॥ स धि त्र मा स रु द्वा य २ हा फु से नै
 दय २ रु द्वा हा ॥ उं पा त्या हा उ उ सि ना दि त्प २ आ शि मां ध अं त गा फ न म ४ रु द्वा
 स्वाहा ॥ ग दामं ग ॥ प र्प त धा त हा रु कर्म म ॥ नं १६ ॥ रु कर्म म ॥ उं डीं डीं डीं डीं नैः ॥
 उं डीं डीं डीं डीं नमः ॥ वा र्ध रु क ॥ पू क्क अ प्र मं ग ॥ उं दा नै गि ली रा रु से नै रु द्वा हा उं
 रु द्वा हा ॥ रु स ज वा म थ ग ष क ओ द स य अ न्ना उ उ नु उ उ अ म अ आ न म ४
 स्वाहा ॥ पू कर्म म ॥ पू कर्म म ॥ हा रु व स य य रु व उ रु द्वा ध स व ल श य न
 त क र्ष न च दि ध त हा उ क्क म ॥ पू क्क मूल ॥ पू क्क क टि ॥ उं न मा नू द हा ॥ प न व त रु क्क

नं १

वायुमंग ॥ उं मा ह्रस्व ग्री उ उ म् ल उ उ ह न मा उ उ म् न उं वा सु कि ४ उं मूल उ व
 ल व १२ म् न्नि २ न म ४ १ फ से न रं ज य २ ध न क स म् र व य न य २ स्वा हा ॥ २ ॥
 श्री ॥ जौं ॥ वा ह्र मंग ॥ वाम ऊं ध वा र्य मंग ॥ उं न मा मूं दाये न म ४ उं न्द्र पत्री
 सा कि पा ल ना य ऊं ज नी ग र्भ सं रु गा य प व न य गाय सर्व ला का य न मः उं दू द
 स्वा हा ॥ त द म् र्ध (उ) र्ग उं न मा व मूं गी न म ४ उं श्री व ला ये न मः उं पा का म् यो २
 म नी स्वा र्ग न म ४ १ वं ४ फ से न रं ज य २ स्वा हा ॥ ति ह न्म त ज य २ स्वा हा ॥ १० ति
 ह न्म त म् र्ध स त्रि तं थ न प ति मंग ४ १ ॥ ॥

स्व ३ द ४

उं न म ४ स क टा द य ॥ ३ ला उ य उ वा व ॥ म् न्द्र ना न्म हा वा हा स क
 टा या सु व म् र्धि व द्द द वा खि ल व मि सा व वा र व नु वा य धि वि
 न उ वा व ॥ म हा दः ख नि म क्का मि व न वा स च ४ फ क । न द ४ य त्रि हा
 नार्थ क थं द्वा र व क्क व ॥ २ ॥ ३ ला उ य उ वा व ॥ उं अ स्य श्री सं क टा द य
 स्मि त्म मे कु स्य श्री वी न्द्र न म् र्धि न नू द्ध व् क्क न्द्र ४ श्री सं क टा द य न द्वा
 वी वा दं न्द्र स किं ४ श्री की ल कं म मा हि वृ ह ल या कि म हा द ४ स्व ना
 न्द्रा वि द्वा वि नि वा न न्म हा मं क ट ना म् नार्थ ज य वि द्वा ग ॥

नि १

15
संकटादि कारुण्यद्वारा विरडिका। एतद्वद्वर्ति वदवीः सुर
द्रवजयप्रदा ॥३॥ एवानी रानतिद्वर्ति एतद्वकाः एतयप्रदा ॥ नानिनी
एवद्व ॥ स्वानां विरडि एव वल्लरी ॥४॥ नमस्तुतमस्तु चलातिरिंघे, वी ॥
नमस्तुतवस्तुत वारानरान ॥ नमस्तुति केमालवि ॥ धनूय, समवास्तुत
गलयस्तुत ॥५॥ तस्या ॥ पूरुमहत्तु ॥ धनूय, ~~वस्तुत~~ लावमा
ते नसिद्धति ॥ तमहं कथयि व्यामिद्रयमस्तुत ॥६॥ यद्येव
एतदिष्टा, संकटाहदयं ॥७॥ अस्तुत वस्तुत यद्येव ॥

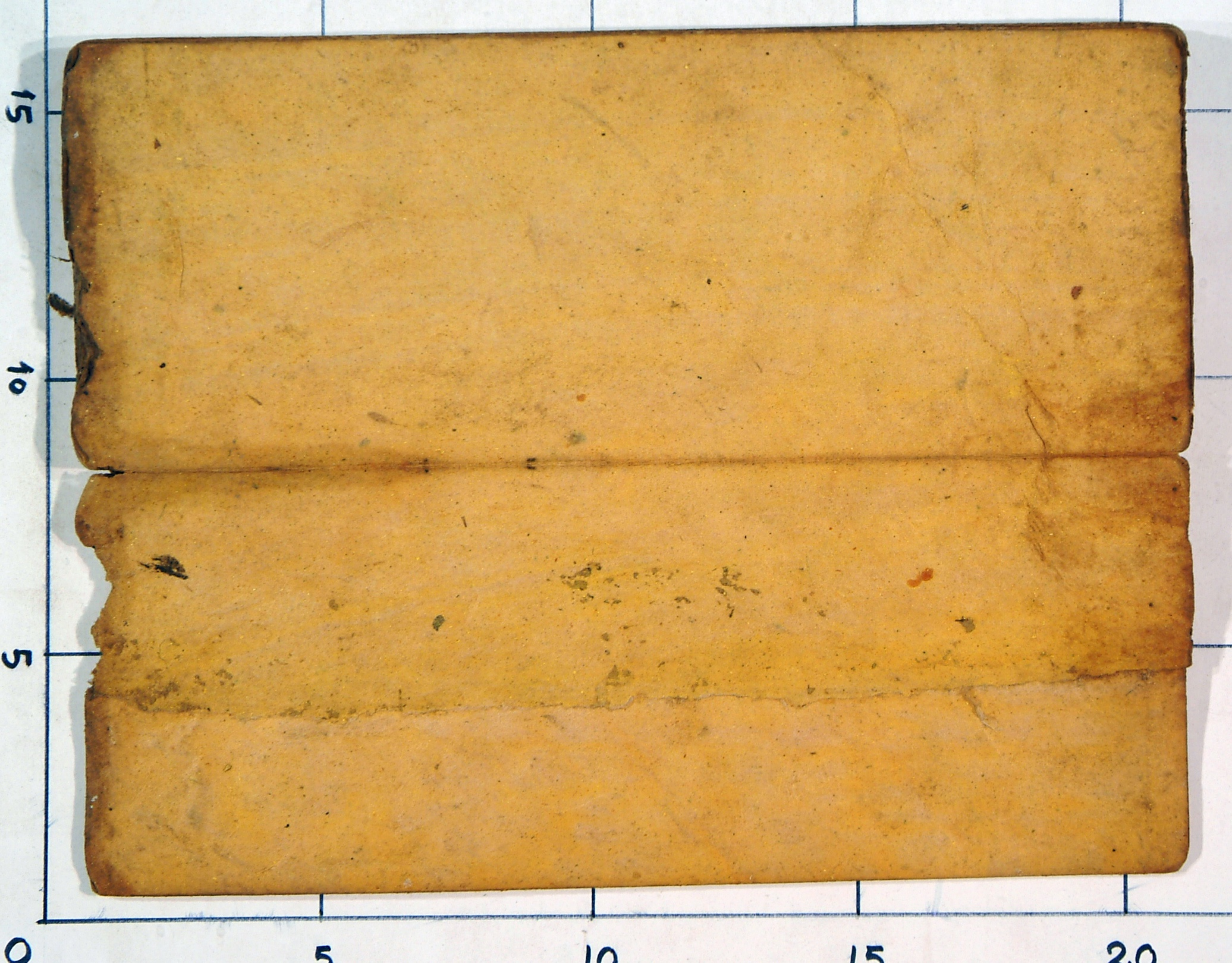
निच ॥८॥ कन्या कोटिप्रदानस्य रुलंया ॥ एतवेति ॥९॥ वृत्ति ॥
नलाकालसंहिताया संकटाप्रकनने श्रीसंकटाहदयं समाप्त ॥ ॥



ॐ नमः श्रीसंकटादये ॥ विष्णुमित्र उवाच ॥ ॥ अथ तां नारायणं
 अस्माकं लक्षणं वर्णयन् । संकटा यामहादेव्याः सर्वस्मां लक्षणं वर्णयन् ॥
 यद्विष्णुमित्र उवाच ॥ कथं तं संकटादये विष्णुमित्र उवाच ॥
 श्रीमहादेव्याः स्वयं दयार्ता । विष्णुमित्र उवाच ॥ ॥ विष्णुमित्र
 उवाच ॥ ॥ अथ कथं तं नारायणं दयार्ता । सायं अस्मा
 कं नयन् ॥ अथ कथं तं दयार्ता । ॥ ॐ अथ श्रीसंकटादये
 नमः स्तुतमस्तु ॥ अथ कथं तं दयार्ता । ॥ अथ कथं तं दयार्ता ॥

ॐ रु वा न रुं कुं भुं म किं सुं भुं काल कं मम सक न म ना न
थ पू न र्ही ना न व स्या र्थे न व वि न्नि या न ॥









सुनदमी

रु ट न

१७ २६ ००
५२ १३ १३ ० श्रीक ८२३

श	च	म	न	व	ग	व	क	उ
१३	६	३	११	१०	१२	११	३	१३
११	६	६	११	६	६	१	६	१
१३	२२	२०	१०	१६	३	१३	२०	०
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०
कप								
१३	१०	१८	२६	३०	३२	६०	६६	१०
११	८	०	१०	३	८	१०	८	०
१३	२८	२६	८	२३	२६	११	१०	१०
०	०	३०	२०	३०	०	३०	०	०

रिप
हो

व	स	म	चि	ध	ज	ह	उ	सि
११	१८	१८	१८	६०	६१	६२	६३	
मा	०	८	१	०	१	८	०	
दि	१०	०	१०	१०	०	१०	२०	०

क	उ	आ	च	म	न	व	ग	व
०	१	३	१	१	२	३	३	३
३	०	३	१	१०	१	२	११	०
१	१०	३	२०	२६	३	१३	३	२६
८	३८	१२	३२	३०	२२	३६	३२	०

न श्री क १२१ २०

व	ग	व
१३	६१	१८
११	३	८
२१	२६	२
३०	३	३३

वष
मास
दिन
घटि

ग	व	क	उ	आ	च	म	न	व
१६	१८	१८	६१	६२	६३	६३	६८	६१
१०	८	८	०	१९	२६	११	२८	२८
३८	१३	३	०	३२	३३	३३	३८	३०
१२	१२	३८	२	३२	३३	३३	३८	३०

रुपि ३

१॥ श्रीमहाविष्णुनमस्तु नमः ॥ नमो
सि य ३, नमो आत्मतत्त्वाय स्वाहा, क्ली
विद्यातत्त्वाय स्वाहा, सोऽं विवर्त्तना

य स्वाहा ॥ गुंगुनुल्या नमः ॥ खवस्त,
गंगानयनय नमः ॥ जवस्त, श्रीमहा
विष्णुनमस्तु नमः ॥ ॥
दिगवर्धन १० ॥ ब्रह्मजाम ३ ॥ ॥

15
अस्य ग्रीमहा विष्णुन सैदनी मंत्रस्य द
विनामूलिजिः शिः न सिः पं लि च्छंदः म
मखे ग्रीमहा विष्णुन सैदनी देवता ह
दय नैवी जंग्र सौः ११ किछाद योः १

5
कौकीलकं सर्वान् स्वस्व देवता प्रीत्य
थ जपे विनि यो गतोल ॥ ॥ कनै न्या
स ॥ नै अंग्र का र्या नमः कौन नै नित्या
खाहा सौः म अ मा र्या व ल द नै अना

15
मिका र्थांद्, कौं क निष्ठिका र्थां वोषट्
सोऽक न तल क न पृष्ठा र्थां रुट् ॥ ॥
ष उं गं न्या स ॥ नुं द द प्रा य न मः कौं
10
जिन स र्था हा, सोऽजि खा ये वषट्, नुं

5
क व चा य द्, कौं न नु न प्रा य वोषट्, सोऽ
स घां ग म्, स्त्राय रुट्, ताल ३। मूलं व्या
य क ३॥ ॥ आत्म यूजा ॥ तदा या यूजा
ता क यूय म् ३, आ य्, ध न् म् डा क न्, म्

15
घोसउ (थं) ॥ ॥ जाग्रुं क न न तिर्थ न
प्रक स्वान्त य ता क य य म ३ भां य धं न
पानि मं डा के न ॥ ॥ ज्ञ न स गू न न य न
१० श्री गू न न य पा मि न म १ य न म गू न न

य पा मि न म १ य न य न गू न न य पा मि
न म १ ॥ ॥ नू ग ल स मू ० श्री महा विष्
नू स नू द य श्री पा दू कां यू ज पा मि न य
५ पा मि न म १ ३ ॥ च स ३ न य न ॥ ॥ स
० 5 10 15 20

लाङ्गुलकं न न आ धा न न का दि ह सो
सदा जिवम हायु न प द्या स ना य न मं
त्रि खं ग मूडा न आ न वाला के मंद
ला रा सां च व र्वा दं त्रि ला च नां पा ॥

कुं ॥ ग न्नी चा यं धा न यं नी रं ग म्य
हं ॥ आ न य व्ध्यं ने मं ॥ स ला ० स
तय । ० नू या नि मूडा के न । मूल
ग म हा त्रि य न स्र यो ॥ स द्वां ॥ ग ॥

15
नमः१। अर्घ्या पाद्यं नमः१ अर्घ्यं स्नानं१
आचमनीयं१। चंदनं१ त्रैलोक्यं चंदनं१
अक्षतं१ पुष्पं१॥ त्रिपाङ्गुलि नमः॥
गन्धनं१ नमः१ देवनं१ नमः१॥ ॥ व

5
लिविष्य॥ गङ्गा नयनं१ मां पूजां
वल्लिं गृह्ण २ स्वाहा वां वदुः कायं१ मां
पूजां वल्लिं गृह्ण २ स्वाहा कां वदुः पाला
य०। पां सव्यं गिनी रथ०। ॐ श्रीं सव्यं

15
विद्यकृतं ह्यसर्वकृतं ह्ये०। मूलं श्रीम
सत्रिषु न सृष्टं दद्यात्सीमावत्तु ह्ये० ह्ये०
प्र० ह्ये० सवाहनं ह्ये०॥ कस्तूरं य॥
१०
धूपं नमः दीपं नमः नेत्रार्घ्यं नमः

ॐ क्रीं हं सः सा हं स्वाहा गृजयाये नमः॥
५
त्रं हं सकलक्रीं वाग्रुवं श्वनी विद्मह क्रीं ह
सकलक्रीं कामश्वनी श्रीमहो सोः सक
लक्रीं नवशक्तीयुवाद्यान् गमय श्रीं न

मः॥ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ नंदसकल
क्रीं क्रीं रुसकहलक्रीं सोः सकलक्रीं ॥ ३
प. २१ ॥ लखकाय गृह्यक्रमाय कीर्त
गरुनामस्तु नैऋत्यं सिद्धिं वरुणं दे

विजयतुल्यं कनैऋतं ॥ लखतय ॥ ३
॥ अर्चं उर्मंदलाकारं व्याप्य न च
चर्तुल्यदं दक्षिणं नैऋत्यं शीगुन
वै नमः ॥ मं गृहीतं किं प्रांहीतं किं ही

15
नैतल्य वचन पयूजा च नैतल्य नैतल्य
यनमं श्रुति ॥ पंगु स्य गूने दाषेन कम्य
तां गगदी श्रुति मृदं पंगु रवायं ग्रीन
मंदाषाः नमं गूनाः ॥ तनं नमस्का ने ॥

नक्षत्रांश्चान्नं गीता नान् ग्राहि मां दृष्टं
कटान् यनमात्ममिहं ॥ नियुक्तमस
तमस्ते ॥ ॥ महावाक् ॥ कायं न वाचा
मनसं न्दीये वा वृद्धात्मना वायु कृतिः

15
10
सुखा वातकनामिपद्यसकलं यत्र स्म
श्रीमत्यनाथे ॐ निसमयप्रामि ॥ कंल
खतय ॥ ॥ अथोदयक । दयालाहान
सला ॐ थिपावन्गलथिपहं स४ सो

5
हं आया । कंरु ३ अस्मापरु ३ ॥ संहा
नमडां स्थां नतु वावतय । कं स्थां काया
व ॥ ॥ सि काये नमः १ नने । सु य्य सा रि
थाय ॥ च न ॥ ॥ दक काय । स्वाने च य ।

नासिपशवलिवाय।सूर्यदवऊय।
 थतेनित्यकर्मविधि॥ शुभमस्तु॥







रुमाग
हजाः